फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 212 फरवरी 2006

कहत कबीर

रिश्तों में निर्भरता और आत्म-निर्भरता (स्वतन्त्रता) दो छोर हैं, सतही हैं। सम्बन्धों में परस्पर निर्भरता में गहराई सम्भव है।

दिल्ली के संग अमरीका में मजदूरों के गत्ते (3)

✱ समस्यायें इतनी बढ गई हैं और स्वयं को इतना कमजोर पाते हैं कि अक्सर चमत्कार में ही आस नजर आती है। मत्था टेकने में हम ने किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी है। अध्यात्म की शक्तियों, विज्ञान की शक्तियों, सब शक्तियों के चमत्कारों के बावजूद हमारी समस्यायें बढती ही जा रही हैं। ✱ परेशानियाँ इस कदर बढ गई हैं कि हमें तत्काल समाधान चाहियें। इन्तजार अपने बस से बाहर लगता है। चुटकी बजा कर परेशानी दूर करने वालों को ढूँढने में हम ने किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी है। अनेकानेक मसीहाओं को आजमाने में हम ने कोई कँजूसी नहीं बरती है। नेताओं-पार्टियों-दादाओं-सिद्धों की चुटकियों और गर्जन को हम ने हमारी परेशानियाँ बढाने वाली ही पाया है।

क्या करें ? कहाँ जायें ? हताशा-निराशा में अपने-अपने में सिमटते हैं और समस्याओं-परेशानियों को बढते पाते हैं। मन नहीं करता, मस्तिष्क मना करता है फिर भी मजार और मसीहा के फेरे लगाना ही अक्सर नजर आता है। इस चक्रव्यूह में एक दरार डालने का प्रयास लगता है **माइकल आराम एक्सपोर्ट मजदूरों** द्वारा दिल्ली में गत्ते ले कर अन्य मजदूरों के बीच जाना, आम लोगों के बीच खड़े होना। सौ मजदूरों को प्रतिनिधियों/नेताओं के जरिये पाँच में बदल कर मुट्ठी में रखने की परिपाटी को चुनौती है 10 का 100-1000-10,000-..... बनने की राह।

दिल्ली में मजदूरों के गत्तों की गमक-धमक अमरीका पहुँची। दमन-शोषण वाली विश्वव्यापी वर्तमान समाज व्यवस्था से पार पाने तथा नई समाज रचना के प्रयासों के लिये एक और शुभ संकेत है यह।

मार्च 05 से कम्पनी द्वारा काम देना बन्द कर फैक्ट्री में मजदूरों को खाली बैठाना, मई में नई फैक्ट्री खोल वहाँ वही काम करवाना, बाहर काम करवाना, तनखा में टालमटोल के बाद सितम्बर माह से वेतन देना ही नहीं, दबाव बढा कर गाजियाबाद और सी- 82 ओखला फेज- 1 स्थित माइकल आराम एक्सपोर्ट फैक्ट्रियों के मजदूरों से इस्तीफे लिखवाना, अमरीका स्थित माइकल आराम ग्रुप की कम्पनी को माल का निर्यात जारी रखना.... इस सब के विरोध में बी- 156 डी डी ए शैड्स ओखला फेज- 1 स्थित माइकल आराम एक्सपोर्ट फैक्ट्री में अगस्त 04 में 28 के निकाले जाने के बाद बाकी बचे ***बीस मजदूरों ने गत्तों पर अपनी बातें लिख कर 27 अक्टूबर 05 से दिल्ली में अन्य मजदूरों के बीच जाना, लोगों के बीच खड़े होना आरम्भ किया था।*** *इफ्टू यूनियन द्वारा श्रम विभाग में कार्रवाई, विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों/समूहों से समर्थन- सहयोग के लिये सम्पर्क, पुलिस को सूचना, पार्षद व विधायक से मिलना और सांसदों से मिलने के प्रयास, पत्र- पत्रिकाओं- टी वी वालों से सम्पर्क, अमरीका में सहयोगी बनाने के लिये कोशिशें। इधर नवम्बर- दिसम्बर- जनवरी में दिल्ली में जगह- जगह गत्ते ले कर मजदूर खड़े हुये, विभिन्न प्रकार का सहयोग मिला और अमरीका में माइकल आराम समूह की कम्पनी से तथा ग्रुप का उत्पादन बेचते वितरकों से अमरीका सरकार के नागरिक प्रश्न पूछने लगे, विरोध जताने लगे (इन्टरनेट पर मजदूरों का पक्ष प्रस्तुत किया गया).....* ***चौतरफा पड़ते दबाव के कारण 25 जनवरी 06 को गत्ते वाले मजदूरों को माइकल आराम डिजाइन कम्पनी में स्थाई नौकरी के नियुक्ति-पत्र, बकाया तनखायें व बोनस दे दिये गये (जुलाई 05 में श्रम विभाग से लौटते समय कार की टक्कर से मरे श्रमिक की विधवा को भी स्थाई नौकरी का नियुक्ति-पत्र)।***

● स्थाई मजदूरों की जगह कैजुअल वरकर रखने, ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखने के लिये हरकतें करना कम्पनियों की सामान्य क्रियायें हैं। स्थाई मजदूर की आधी, चौथाई, छठवें हिस्से की तनखा में उतना ही उत्पादन करवाना (बल्कि अधिक उत्पादन करवाना) यहाँ 15-20 वर्ष से सरकारों- कम्पनियों के क्रियाकलापों की मुख्य चारित्रिकता है। निगाहों को संसार के पटल पर रखें तो उत्पादन के संग लेखाजोखा व वितरण के कार्य को अमरीका-यूरोप से निकल कर दुनियाँ के अन्य क्षेत्रों में तीव्रतर गति से जाते पाते हैं। मैक्सिको- चीन- भारत- बंगलादेश-..... का अर्थ है यूरोप- अमरीका में वेतन के दसवें, बीसवें, तीसवें, चालीसवें, हिस्से में कार्य करवाना।

भाप-कोयला आधारित मशीनों द्वारा स्थापित मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली वर्तमान समाज व्यवस्था की मारक क्षमता को बिजली और इलेक्ट्रोनिक्स ने सातवें आसमान पर पहुँचा दिया है। कृत्रिम उपग्रह- कम्प्युटर- इन्टरनेट ने सिर-माथों पर बैठों के लिये यूरोप-अमरीका में उत्पादन कार्य कम कर भयभीत मजदूरों को जकड़ में कसने का कार्य किया है तथा भारत-चीन में दस्तकारों-किसानों की सामाजिक मौत की रफ्तार बढा कर टके सेर इन्सान उपलब्ध होना सुनिश्चित किया है। बेरोजगारों की भरमार (अमरीका सरकार की जेलों में बीस लाख से ज्यादा लोग बन्द), भारत में सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन के आधे से भी कम में काम करने के लिये कतारें. ... जैसे ज्ञान को ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं का वाहक वाहन कह सकते हैं वैसे ही विज्ञान को मण्डी-मुद्रा का वाहक वाहन कह सकते हैं (देवताओं के वाहक वाहन बहुत पीछे छूट गये हैं)।

● ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था के गठन के संग आरम्भ हुई मानव योनि की त्रासदी इधर मण्डी-मुद्रा के दबदबे के संग समस्त जीवों के लिये, सम्पूर्ण पृथ्वी के लिये विनाशकारी बन गई है। सामाजिक बीमारी इस कदर भयावह रूप धारण कर चुकी है कि बीमारी का हर लक्षण स्वयं बीमारी नजर आने लगा है। ऐसे में उपचार के नाम पर उन तरीकों की भरमार है जो क्षणिक राहत के आवरणों से बीमारी को ढकते हैं। जबकि, हमें राहत के वो तरीके चाहियें जो तात्कालिक समस्या से राहत लिये हों और बीमारी को उजागर कर उसके उपचार की राहें प्रदत करते हों।

राजनीति में राजा का स्थान जैसे चेहराविहीन सरकार ने लिया वैसे ही फैक्ट्री-उत्पादन में मालिक का स्थान बिना चेहरे वाली कम्पनी ने ले लिया। इन हालात में व्यक्ति-विशेष के गुण-अवगुण अधिकाधिक गौण होते गये हैं। अस्सी-सौ वर्ष पूर्व ही ईमानदार-असली-बलिदानी प्रतिनिधित्व की सीमा "शानदार पराजय" स्पष्ट हो गई थी। आज बेईमानी पर छाती पीटना विलाप की रस्म अदा करना है।

सरलीकरण के लिये उत्पादन क्षेत्र को ही लें। कम्पनी; कम्पनी की कई उत्पादन इकाइयाँ; उत्पादन की एक शाखा में कई कम्पनियाँ; कम्पनियों में **(बाकी पेज चार पर)**

कानून हैं शोषण के लिये
छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37–40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7–10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगनी दर से; ● हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर-हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी और महीने में 4 छुट्टी पर जुलाई 05 से 2360 रुपये है।

सेक्युरिटी गार्ड : " 32-34 हुडा मार्केट सैक्टर-16ए कार्यालय वाली **सेन्टिनल सेक्युरिटी सर्विस** कम्पनी के पास लगभग 5000 गार्ड हैं। आठ घण्टे और 26 दिन पर 1900 रुपये और चारों रविवार लगाने पर 2400 रुपये गार्ड को देते हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के 3200 रुपये देते हैं।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : " 12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर की तनखा आज 17 जनवरी तक नहीं दी है। नवम्बर का वेतन मजदूरों को 27 दिसम्बर को और स्टाफ को 2 जनवरी को जा कर दिया। फैक्ट्री में रोज 12 घण्टे तो काम करना ही पड़ता है – नवम्बर के ओवर टाइम का भुगतान आज 17 जनवरी तक नहीं किया है।"

मितासो एप्लाइन्सेज वरकर : "प्लॉट 64 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 75 से ज्यादा मजदूरों को 1500-1900 रुपये तनखा देते हैं और उनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

नूकेम पाउडर मजदूर : " प्लॉट 177 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर का वेतन आज 14 जनवरी तक नहीं दिया है – तनखा माँगने पर निलम्बन।"

पूजा फोर्ज वरकर : "पृथला गाँव स्थित फैक्ट्री में हैल्पर को 10 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर महीने में 2100 रुपये। वैसे फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम 2 घण्टे का बताते हैं और उसका भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं – ज्यादा चोट लगने पर कम्पनी प्रायवेट में इलाज करवा कर नौकरी से निकाल देती है। हर मजदूर से मैनेजमेन्ट कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवा कर रखती है – जब मर्जी होती है तब नौकरी से निकाल देती है।"

कन्डोर पावर प्रोडक्ट्स मजदूर : "प्लॉट 22 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में इस समय जब काम कम है तब 50 वरकर हैं – सीजन में मजदूरों की सँख्या काफी बढा देते हैं। अब जो 50 हैं उनमें से 22 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और बाकी 28 मजदूरों की तनखा भी 1800-2000 रुपये है। कम्पनी ने नवम्बर और दिसम्बर की तनखायें आज 12 जनवरी तक नहीं दी हैं। दिवाली पर देय बोनस नहीं दिया है। मैनेजिंग डायरेक्टर का लड़का बहुत गालियाँ देता है।"

एच. जे. इंजीनियर्स वरकर : "प्लॉट 352 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर के वेतन और नवम्बर के ओवर टाइम का भुगतान आज 12 जनवरी तक नहीं किया है। नौकरी छोड़ने वाले मजदूर के साथ साहब दुर्व्यवहार करते हैं और दो-तीन महीने चक्कर कटवा कर हिसाब देते हैं। फैक्ट्री में ई.एस.आई. का प्रावधान है पर पी.एफ. का नहीं।"

क्लच आटो मजदूर : " 12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर का वेतन 8 जनवरी को देना शुरू किया परन्तु आज 17 जनवरी तक सब मजदूरों को दिसम्बर की तनखा नहीं दी है।"

शरद मैटल वरकर : " प्लॉट 45 संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों को तनखा बैंक के जरिये देने से और देरी होने लगी है – वेतन अब 18-19 तारीख को मिलता है। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की तनखा 1800-2000 रुपये।"

एवन ट्युब मजदूर : "प्लॉट 42 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे कम्पनी सिंगल रेट से देती है और एक दिन छुट्टी करने पर दो दिन की दिहाड़ी काट लेती है। फैक्ट्री में काम करते 175 मजदूरों में से 10-12 के ही ई.एस.आई. व पी.एफ.। चोट लगने पर पट्टी भी नहीं करवाते – ड्युटी से हटा देते हैं और कहते हैं कि ठीक हो जाओ तब ड्युटी पर आ जाना। फैक्ट्री में टट्टी-पेशाब के लिये मात्र दो लैट्रीन – वहाँ लाइन लगी रहती है। भोजन अवकाश के समय भी फैक्ट्री से बाहर नहीं जाने देते।"

धारा इन्डस्ट्रीज वरकर: " प्लॉट 35 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1400-1800 रुपये – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :
★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

कुछ विस्तार से...
(पेज तीन का शेष)

साहब देते रहे, डॉक्टर को पैसे कम्पनी ने दिये। उपचार के बाद अगस्त में ड्युटी पर रख लिया परन्तु कोई मुआवजा नहीं दिया। फिर 17 सितम्बर को सुरेन्द्र को नौकरी से निकाल दिया। श्रम विभाग में शिकायत पर तारीखें पड़ी परन्तु कम्पनी तारीखों पर उपस्थित ही नहीं हुई। अब मामला श्रम आयुक्त को चण्डीगढ़ भेज दिया गया है।"

सेक्युरिटी गार्ड : "फैक्ट्री की स्थाई नौकरी छूटने के बाद पहलेपहल मैं सैक्टर-23 में कार्यालय वाली **तिरंगा सेक्युरिटी सर्विस** में लगा। यहाँ गार्ड को रोज 12 घण्टे ड्युटी और महीने के तीसों दिन काम के बदले में 1400-2000 रुपये देते थे। ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। पैसे रो-रो कर देते थे। साल-भर बाद मैं संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 में कार्यालय वाली **सनलाइट सेक्युरिटी** में लगा था। इसमें 12 घण्टे रोज ड्युटी और महीने के तीसों दिन काम के बदले में 2400-3000 रुपये देते थे। ई.एस.आई. व पी.एफ. कुछ गार्डों के थे – मुझे ई.एस.आई. का पक्का कार्ड दिया था और नौकरी छोड़ने पर फण्ड भी दुगना मिला। फिर मैं सैक्टर-11 में कार्यालय वाली **एच आई एण्ड एस एस** में लगा। इसमें 12 घण्टे रोज ड्युटी और महीने के तीसों दिन काम के बदले 3300-4500 रुपये देते थे। यहाँ 200 रुपये की वर्दी 600 में थोपी और वेतन राशि छिपा कर हस्ताक्षर करवाये। ई.एस.आई. का पक्का कार्ड दिया। जो पैसे देते थे उनमें से 12 प्रतिशत पी.एफ. के नाम से काटते थे। नौकरी छोड़ने पर जब पी.एफ. फार्म भरा तब पता चला कि पी.एफ. राशि सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन के अनुसार जमा करवाई गई थी। दुगनी राशि के रूप में मुझे अपने पैसे ही मिले! एच आई एण्ड एस एस द्वारा पी.एफ. में बराबर राशि भरना तो दूर रहा, चवन्नी तक नहीं भरी। फिर मैं संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 में कार्यालय वाली **त्रिशूल सेक्युरिटी** में लगा। इसमें 12 घण्टे रोज ड्युटी और महीने के तीसों दिन काम के बदले 2300-3500 रुपये देते थे। पी.एफ. के नाम पर हर महीने 322 रुपये काटे और नौकरी छोड़ने पर जब फार्म भरा तब 240 रुपये की राशि दर्ज की – कम्पनी की तरफ से कोई पैसे जमा नहीं, मुझे 240 के हिसाब से पैसे मिले। अब मैं जिस सेक्युरिटी सर्विस में लगा हूँ उसमें भी 12 घण्टे रोज ड्युटी और महीने के तीसों दिन काम करता हूँ। गार्ड के रूप में मैं फैक्ट्रियों पर रहा हूँ। जो गार्ड रात को सड़क पर गश्त करते हैं और सीटी बजाते हैं उन्हें सेक्युरिटी कम्पनियाँ सब से कम तनखा देती हैं। उनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं होती। लगातार रात की ड्युटी रहती है.... हाँ, ड्युटी 10 घण्टे की – एक दिन भी छुट्टी कर ली तो पैसे काट लिये जाते हैं।"

सड़कें कत्लगाह हैं।

कुछ विस्तार से

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : " प्लॉट 48 - 49 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में यूँ तो पूरी फैक्ट्री में ही बुरा हाल है पर सबसे बुरी स्थिति फैटलिंग विभाग में है – इसी में बफिंग और पैकिंग सैक्शन भी हैं। शिफ्ट 12 घण्टे की – फैटलिंग में सुबह 7 से रात 7 बजे और रात 7 से अगले रोज सुबह 7 तक, बफिंग में सुबह 8½ से रात 8½ बजे और रात 8½ से अगले रोज सुबह 8½ तक, रिपेयर वालों की सुबह 8½ से रात 8½ की शिफ्ट। ओवर टाइम 3½ घण्टे का कहते हैं और भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है और कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय तक नहीं देती। सफाई कर्मचारी नहीं हैं और ड्युटी पहुँचते ही पहला काम हमें विभाग में झाड़ू लगाने का करना पड़ता है। फैक्ट्री में फैटलिंग विभाग के नीचे गोदाम है और ट्राली के लिये लिफ्ट भी है पर जल्दी के लिये हम से डिब्बे सिर पर भी ढुआते हैं। उत्पादन ज्यादा माँगते हैं और नौकरी से निकालने की धमकी देते रहते हैं – लगातार लगे रहना पड़ता है। फैक्ट्री में मोटरसाइकिल/स्कूटर के ही 990 पुर्जे बनते हैं – अन्य उत्पादन इनके अलावा है। सुपरवाइजर भी 12 घण्टे की ड्युटी करते हैं और सुपरवाइजरों के आपसी झगड़े ने हमारी परेशानियाँ बढा दी हैं। फैक्ट्री में 12 घण्टे की ड्युटी के बाद एक घण्टे से ज्यादा रोकने पर कम्पनी मजदूर को 9 रुपये देती है – एक सुपरवाइजर 12 घण्टे बाद काम जारी रखने की कह जाता है तो दूसरा सुपरवाइजर एक घण्टा पूरा होते ही जाने की कह कर वरकर को 9 रुपये से वंचित कर देता है। डाइकास्टिंग में अल्युमीनियम पीस पर बर्र आती है और दस्ताने नहीं हों तो हाथ कट जाते हैं – रिपेयर वालों को एक सुपरवाइजर दस्ताने देगा तो दूसरा नहीं देगा। ऊपर वाले साहबों को शिकायत करने पर वे कहते हैं कि दस्ताने सुपरवाइजर ही देगा। एक सुपरवाइजर की शिफ्ट का वरकर दूसरे की शिफ्ट तक रुका रहा तो उसे ऐसी जगह लगा दिया जायेगा जहाँ काम करने का उसे अनुभव नहीं है...। फैक्ट्री में मजदूर बरसों से लगातार काम करते रहते हैं और कम्पनी कभी एक तथा कभी दूसरे ठेकेदार के खाते में नाम दर्ज कर ब्रेक दिखाती रहती है।"

भारतीय इन्डस्ट्रीज वरकर : " 20/4 मथुरा रोड़ स्थित **कटलर हैमर** फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों के साथ कदम - कदम पर भेदभाव और दुर्व्यवहार किया जाता है। सेक्युरिटी वाले गाली दे कर बात करते हैं। हाजरी लगवाने के लिये एक लम्बी कतार में खड़े रहना पड़ता है और उस कतार में भी जमा - तलाशी लेते हैं। पाँच मिनट पहले आना और पाँच मिनट बाद में जाना थोप रखा है। स्थाई मजदूरों और ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों के बीच कैन्टीन में समानता का व्यवहार नहीं होता। स्थाई मजदूरों को चाय फ्री दी जाती है पर ठेकेदार के जरिये रखे हम वरकरों को दो रुपये में एक कप दी जाती है। स्थाई मजदूरों को चाय स्टील के गिलास में देते हैं और हमें कहते हैं कि गिलास घर से लाओ। हमें 10 रुपये में पूरी थाली भोजन नहीं देते जबकि परमानेन्टों को देते हैं। हमें कैन्टीन के अन्दर भोजन नहीं करने देते, हमारे लिये कैन्टीन में अमर सिंह राठौड़ वाली खिड़की बना रखी है – खाना बाहर से लो और बाहर मैदान में जाओ चाहे सर्दी हो या गर्मी या बरसात। हम सब ने आई.टी.आई. की हुई है और स्थाई मजदूरों के संग - संग उत्पादन कार्य करते हैं – हमें परमानेन्ट वरकरों से आधी तनखा दी जाती है।"

श्री पशुपती उद्योग मजदूर : " प्लॉट 2, नोरदर्न इण्डिया कम्पलैक्स, 20/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 13 पावर प्रेसों पर रोज 12 घण्टे और रविवार को 8 घण्टे ड्युटी करनी पड़ती है। हैल्परों की तनखा 1400 - 1800 रुपये और ऑपरेटरों की 2000 - 2700 रुपये। रोज के 3½ घण्टे और रविवार के 8 घण्टे के ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में काम करते 35 मजदूरों में से 10 की तनखा में से ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम पर 320 रुपये महीना काटते हैं पर किसी को भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. की पर्ची नहीं।.... कई फैक्ट्रियों में 1995 से पावर प्रेस ऑपरेटर का काम कर चुका सुरेन्द्र जनवरी 04 में श्री पशुपति उद्योग में लगा। 7 जुलाई 05 को रात 8½ बजे शुरू हुई शिफ्ट में सुरेन्द्र था। रात 1 बजे गुल्ला टूटने से पावर प्रेस डबल आ गई – सुरेन्द्र का बाँया हाथ प्रेस में आ गया और अँगूठा जड़ से कट गया। मैनेजमेन्ट सुरेन्द्र को सैक्टर - 7 में डॉ. पंकज भाटिया के नर्सिंग होम ले गई। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी गई और ई.एस.आई. अस्पताल नहीं ले जाया गया। मुआवजा और पक्की नौकरी के आश्वासन **(बाकी पेज दो पर)**

टेकमसेह

टेकमसेह प्रोडक्ट्स मजदूर : " 38 किलो मीटर मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मजदूर फालतू बता कर कम्पनी ने कई बार छँटनी की जिसके कारण इस समय फैक्ट्री में स्थाई मजदूर 620 ही रह गये हैं और.... और अब एक हजार से ज्यादा कैजुअल वरकर सीधे - सीधे उत्पादन कार्य में हैं। फैक्ट्री में बहुत ठेकेदार भी हैं जिनके जरिये अलग से 150 से ज्यादा वरकर तो हर समय फैब्रिकेशन, पैकिंग - हैन्डलिंग, कैन्टीन, माली - सफाईकर्मी - प्लम्बर, बड़ी मेन्टेनैन्स, पी ओ पी छत मरम्मत, बन्दर भगाने - पकड़ने.... और सेक्युरिटी में रखे जाते हैं। और अब कम्पनी सीधे - सीधे उत्पादन कार्य में भी ठेकेदारों को लाने लगी है – ड्रिलिंग का कार्य ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों से करवाना शुरू भी कर दिया है। कम्पनी के संग - संग नेताओं की दलील सुनिये : कैजुअल वरकरों को कैजुअल रखने के लिये 6 महीने में ब्रेक करना पड़ता है और नये वरकर से क्वालिटी की समस्या पैदा होती है, ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों से यह सिरदर्द खत्म होता है क्योंकि वे लगातार काम करते रहेंगे.....

" मैनेजमेन्ट - यूनियन एग्रीमेन्ट द्वारा उत्पादन 4000 से बढा कर 6400 कम्प्रेसर प्रतिदिन कर दिया गया है – कम्पनी ने क्षमता 8000 प्रतिदिन घोषित की है। दिसम्बर 05 में 6562 प्रतिदिन कम्प्रेसर उत्पादन का औसत रहा – स्थाई मजदूरों को इन्सेन्टिव के 162 रुपये। ज्यादा कैजुअल वरकर रखने, क्रैन्क शाफ्ट व ब्लॉक कास्टिंग जैसा प्रारम्भिक कार्य बाहर करवाने, कम्प्रेसर के नये मॉडल में पुर्जे कम लगने - ऑपरेशन कम होने, अधिक ऑटोमैटिक नई मशीनें लगाने, कास्ट आयरन की जगह अल्युमीनियम इस्तेमाल करने आदि के कारण अधिक उत्पादन के बावजूद स्थाई मजदूरों को काम का बोझ ज्यादा महसूस नहीं होता। अब कम्प्रेसर में कम से कम 100 पुर्जे लगते हैं और सब बाहर से आते हैं। यहाँ फैक्ट्री में होते मुख्य कार्य हैं : मशीनिंग, असेम्बली, स्पॉट वैल्डिंग, मोटर वाइन्डिंग, धुलाई (कई प्रक्रियायें), ऑटोमैटिक कनवेयर पर पेन्ट।

" रेफ्रिजरेट्रों के उत्पादन में उतार - चढाव के कारण टेकमसेह कम्पनी को भी लगातार उत्पादन नहीं चाहिये – अक्टूबर 05 में 10 दिन और नवम्बर में 12 दिन फैक्ट्री में छुट्टी की। कुछ छुट्टियाँ स्थाई मजदूरों के मत्थे मढ दी गई और कैजुअल वरकरों को तो छुट्टियों के पैसे कम्पनी देती ही नहीं – फलाँ तारीख को आना कह दिया जाता है। जब कम्पनी को कम उत्पादन चाहिये तब कभी कनवेयर खराब, कभी स्पॉट वैल्डिंग टूटने की बात, कभी लीक की बात। कम्पनी को जब ज्यादा उत्पादन चाहिये तब सब चलता है पर उत्पादन नहीं चाहिये तब क्वालिटी में अत्याधिक सख्ती : ताम्बे का रंग नीला हो रहा है, ट्यूब ठीक नहीं, पेन्ट ठीक नहीं..... मैनेजमेन्ट - यूनियन एग्रीमेन्ट द्वारा निर्धारित मासिक औसत से उत्पादन कम होने पर स्थाई मजदूरों का इन्सेन्टिव तो हवा होता ही है, वेतन में कटौती की बात भी है।

" टेकमसेह में कैजुअल वरकर स्थाई मजदूरों के अगल - बगल में मशीनें चलाते हैं और अधिकतर आई.टी.आई. हैं। कैजुअल वरकरों की तनखा 2360 - 3600 रुपये है जो कि वही काम करते स्थाई मजदूरों की तनखा का पाँचवाँ - सातवाँ हिस्सा होती है। फैक्ट्री गेट पर सेक्युरिटी वाले कैजुअल वरकरों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं – 'साइकिल चला कर अन्दर क्यों आया, बाहर निकल, कल आना', जूते - जुराब खुलवा कर तलाशी..... इधर कम्पनी ने फैक्ट्री गेट पर दो बन्दूक वाले भी रख लिये हैं। ठेकेदार नये वरकर को 1700 - 1800 रुपये तनखा देते हैं, 17 साल के लड़के भी काम करते हैं।

" मुख्यतः व्हर्लपूल और सैमसंग के लिये कम्प्रेसर बनाती टेकमसेह में स्टाफ की सँख्या 100 के करीब है और इन में नये - नये बहुत हैं – एम.टेक. करके आते हैं, छोड़ कर चले जाते हैं। नये स्टाफ वालों को बान्धे रखने के लिये इधर कम्पनी ने दिसम्बर में नयों को चालीस हजार से एक लाख रुपये तक इनाम, 2800 - 5000 रुपये वार्षिक वेतन वृद्धि, पदोन्नति दी हैं। और, कुछ स्थाई मजदूर – खासकरके प्रेस शॉप व मशीन शॉप में – अपने आप ही सुपरवाइजर का काम कर रहे हैं....."।

दिल्ली के संग अमरीका में मजदूरों के गत्ते

..... (पेज एक का शेष)

लगते- कम्पनियों से निकलते पैसों के विभिन्न स्रोत- पड़ाव; मण्डी की माँग से अधिक उत्पादन की क्षमता – उत्पादन इकाइयों द्वारा, उत्पादन की हर शाखा द्वारा सामान्य तौर पर अपनी क्षमता से कम, काफी कम उत्पादन करना; उत्पादन इकाइयों के बन्द होने- कम्पनियों के दिवालिया होने का एक सामान्य प्रक्रिया बन जाना; देश- विदेश की सीमाओं का अर्थहीन होते जाना;.....इन हालात ने कम्पनियों के उन कदमों को जिन्हें पिछली पीढ़ी के मजदूर आक्रमण मानते थे उन्हें आज कम्पनियों की सामान्य दैनिक क्रिया बना दिया है। इस सब से बहुमुखी असन्तोष पनपा है – इसका कोई एक लक्ष्य नहीं है, कोई एक समस्या के समाधान वाली बातें नहीं रही हैं।

ऐसे माहौल से पार पाने के लिये तौर- तरीके क्या- क्या हो सकते हैं? आवश्यकता विश्व- व्यापी संगठित प्रयासों की लगती है – उन्हें मूर्त रूप कैसे दें? पुर्जेनुमा की जगह मनुष्य- रूपी ज़ोड़ों- तालमेलों के लिये संगठनों के स्वरूप कैसे हों? सामाजिक बीमारी के इस अथवा उस लक्षण से व्यापक- स्तर पर जूझ रही प्रत्येक व्यक्ति, जूझ रहा हर समूह इन प्रश्नों से रूबरू है, इन सवालों को सामने ला रही है। माइकल आराम एक्सपोर्ट मजदूरों की दिल्ली के संग अमरीका में गमक- धमक इन सवालों को नई मुखरता के साथ सामने लाई है।

● कोई मन्त्र नहीं है। कोई सूत्र नहीं है। बल्कि, ऐसे अनेकानेक सहज- सरल कदम हैं जो स्थाई मजदूर हों चाहे बढती सँख्या वाले कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे जाते वरकर, सब उठा सकते हैं। प्रत्येक कदम तिनके समान है पर तिनकों का योग उल्लेखनीय प्रभाव लिये है। अपने में सिमटते- सिकुड़ते जाने की बजाय अन्यों के बीच बातों को ले जाना, अन्यों से जुड़ना सार्थक कदमों की चारित्रिकता लगती है :

– स्थानीय, प्रान्तीय, केन्द्रीय स्तर पर श्रम विभाग, कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस. आई.), भविष्य निधि संगठन (पी.एफ.), स्वास्थ्य विभाग, प्रदूषण निकाय आदि के पते प्रत्येक मजदूर के पास होना बनता है। "सब बिके हुये हैं", " छापे के वक्त खा- पी कर मामले रफा- दफा कर देते हैं" के आधार पर इन्हें अपनी बातें कहना ही नहीं का आधार तिनके से चमत्कार की आस पूरी नहीं होने में लगता है। हाँ, पहचान से- निशाना बनने से बचने के लिये एक फैक्ट्री के मजदूर अपनी बातें दूसरी फैक्ट्री के मजदूरों से लिखवा सकते हैं।

– पार्षद, विधायक, सांसद, श्रम मन्त्री (प्रान्तीय व केन्द्रीय), मुख्य मन्त्री, प्रधान मन्त्री, राष्ट्रपति के सन्दर्भ में भी उपरोक्त बातें ही।

– ऑडिट- बायर के आगमन के समय फैक्ट्री में सफाई, उस दिन के लिये वर्दी- दस्ताने- मास्क- चश्मे- टोपी देना, पूछें तो 12 घण्टे की ड्युटी को 8 घण्टे की बताना, आमदनी ज्यादा बताना आदि की मजदूरों को सख्त हिदायतें..... फैक्ट्री संचालकों की कमजोरी को इंगित करते हैं – ऊँच- नीच वाली वर्तमान व्यवस्था में सिर- माथों पर बैठे लोग वास्तविकता की बजाय अपनी छवि के बारे में बहुत चिन्तित रहते हैं। इसलिये फैक्ट्री के उत्पादन के खरीददारों और बेचने वालों के पतों की जानकारी प्राप्त करना बनता है। और, फैक्ट्री का माल खरीदने- बेचने वालों को फैक्ट्री हालात की वास्तविक स्थिति पत्रों में लिखना दबाव के लिये एक और तिनका बनता है।

–उत्पादन के आपस के जोड़ (पुर्जों का निर्माण और उन्हें जोड़ने का काम) विश्वव्यापी हैं, उत्पादन का वितरण भी ऐसा ही है। उत्पादन- वितरण का दायरा चूँकि अधिकाधिक विश्वव्यापी हो रहा है, दुनियाँ के विभिन्न क्षेत्रों में मित्रों- सहयोगियों के लिये प्रयास मजदूरों के लिये एक अनिवार्य आवश्यकता बन गये हैं। इसे ध्यान में लेना- लाना और भाषा- सम्पर्क की दिक्कतों से पार पाने के प्रयास प्राथमिक कदम हैं, महत्वपूर्ण तिनकों की रचना हैं।

– सहयोगियों की मदद से अपनी- अपनी फैक्ट्री की रोजमर्रा की हकीकत को हाथ से लिखे पोस्टर जगह- जगह चिपका कर अधिकाधिक सार्वजनिक करना एक और तिनका बनता है।

– अखबारों को फैक्ट्री में सामान्य हालात के बारे में बार- बार लिखना – नहीं छापना अथवा बहुत थोड़ा छापना उनके चरित्र में है पर अखबारों को मजदूरों के पत्र तिनके तो बनते ही बनते हैं।

– अपने पड़ोसियों- परिचितों को फैक्ट्री/दफ्तर/कार्यस्थल की दैनिक वास्तविकता से अवगत कराते रहना बहुत महत्वपूर्ण है, बहुत- ही आसान भी है। खट्टे- मीठे अनुभवों को एक- दूसरे से साँझा करना हर एक के लिये एक सहज क्रिया बन सकती है। एक- दूसरे की टाँग खींचने की बजाय एक- दूसरे की थोड़ी- थोड़ी सहायता. ... समय के साथ यह तिनकों के गट्ठर बनते हैं।

और, जो आसानी से कर सकते हैं उसे नहीं करने के लिये बहाने ढूँढना- गढना बद से बदतर हो रहे हालात की गति तीव्र करना लिये है।■

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद–121001

विचारणीय

प्रक्रिया से परे

जितनी अधिक परेशानी होती है उतनी ही तीव्र- शीघ्र समाधान की इच्छा होती है। जितनी ज्यादा तीखी तकलीफ होती है उससे उतना ही जल्दी छुटकारे की चाह होती है। वर्तमान में परेशानियों का अम्बार लगा है, तकलीफें अन्तर्मन को बीन्ध रही हैं। टोटकों के लिये यह स्वर्णिम दौर है। वर्तमान में विज्ञान टोटके प्रदान करने में सर्वोपरि है.....

चटपट को- चटपटे को वर्तमान की एक विशेषता कहा जा सकता है। निष्कर्ष- फल- परिणाम तत्काल चाहियें, परोसे जाने चाहियें। फौरन- फटाफट का अर्थ है खरीदिये। क्या खुशी चाहिये ? "खुशी" खरीदिये.....

तत्काल नतीजों की चाहतें उन प्रक्रियाओं को ओझल कर देती हैं जिनके परिणामों अथवा परिणामों से मुक्ति की इच्छायें होती हैं। मण्डी में बिकती चमक- दमक उन प्रक्रियाओं को छिपा देती है जिनका फल वह चमक- दमक होती है। प्रक्रियाओं का छिपा होना, प्रक्रियाओं को छिपाना चमत्कारों को आधार प्रदान करता है और व्यक्ति को, मानवों को असहाय ठहराता है। यह सिर- माथों पर बैठने वालों के माफिक है....

प्रकृति की ही तरह सामाजिक क्षेत्र में अनेकानेक प्रक्रियायें चलती रहती हैं जो कि अलग- अलग भी हैं और आपस में जुड़ी हुई भी हैं। हर प्रक्रिया के अनेक चरण/पड़ाव होते हैं और आमतौर पर इस- उस चरण को निष्कर्ष- फल के तौर पर लिया व प्रस्तुत किया जाता है।

मण्डी- मुद्रा का दबदबा वर्तमान है। वर्तमान का घटना उद्योग प्रक्रियाओं को छिपाने के लिये चटपटे चमकीले रंग- रोगन के संग- संग गन्दे- डरावने भयावह का घालमेल परोसने में कोई कँजूसी नहीं करता। भद्दी- बेहुदी- दुखद चमक और हिंसा- व्यभिचार- अपमान का डर मण्डी- मुद्रा के दबदबे का गठन करती प्रक्रियाओं की सामान्य उपज हैं.... भ्रष्टाचार- महँगाई- बेरोजगारी- धोखाधड़ी- भागमभाग- तन और मन की बीमारियाँ- सड़क पर और फैक्ट्री में "एक्सीडेन्ट" में अंग खोना और मृत्यु- किसानों और दस्तकारों द्वारा आत्महत्या- पर्यावरण प्रदूषण- अकेलापन- एटम बम- पुलिस और फौज- विश्व चैम्पियन- हीरोइन- ..... मण्डी- मुद्रा के दबदबे के दौरान उपजती प्रक्रियाओं की सामान्य उपज हैं। लेकिन रेडियो- टी वी- फिल्म- अखबार- पत्रिकायें- पाठ्यक्रम- विशेषज्ञ- विद्वान सारतः इनके स्वयंभू होने के फतवे देते हैं.....

मण्डी- मुद्रा के संचालन के तौर- तरीकों/ नीतियों पर वाद- विवाद, उठा- पटक, मारामारी वर्तमान के अटूट, अविभाज्य अंग हैं। मण्डी- मुद्रा को दी जा रही चुनौतियाँ वर्तमान में शामिल नहीं हैं।

प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप प्रत्येक व्यक्ति सामान्य तौर पर कर सकता है, प्रक्रियाओं को हर व्यक्ति आसानी से प्रभावित कर सकती है। व्यक्तियों के बीच गैर- पुर्जेनुमा जोड़ों- तालमेलों में हस्तक्षेप को सार्थक और कारगर बनाने की क्षमता है।■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।